गरमी की दोपहर

लेखक : अंजान

Hindi Transliteration (Fonts) By: Sinsex

एक दिन मैं अपने घर में अकेला था। गरमी के दिन थे और भरी दोपहर थी। बीवी मायके गयी हुई थी और बच्चे गये थे स्कूल। मैंने घर में कुछ ज़रूरी काम करने के लिये ऑफिस से छुट्टी ले रखी थी।

कहते हैं कि किसी औरत को गैर मर्द के साथ अकेला नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि मर्द उसे पकड़ कर चोदने की ही सोचेगा। कैसे इसकी बूर में अपना लंड डाल दूँ – यही ख्याल उसके मन में कुलबुलायेगा। दोस्तों मेरे साथ ऐसा ही हुआ।

करीब एक बजे दरवाजे पर हुआ टिंग टोंग! दरवाजा खोला तो सामने मानो एक अप्सरा खड़ी थी। ३०–३२ साल की साँवली और गज़ब की सुंदर औरत साड़ी पहने हुए और हाथों में कागज़ और कलम लिये हुए कोयल का आवाज़ में बोली, "माफ़ कीजियेगा, क्या बहनजी हैं?"

मैंने कहा, "जी नहीं, इस वक्त तो सिर्फ़ मैं हूँ। आप कौन हैं ?"

उसके माथे पर पसीने की कुछ बूंदें थी। वोह बोली, "ज़रा एक ग्लास पानी मिलेगा?"

मैंने कहा, "हाँ, क्यों नहीं ?"

वोह ज़रा सा अंदर आयी। मैंने पानी का ग्लास देते हुए पूछा, "क्या बात है, आप हैं कौन?"

पानी पी कर वोह बोली, "जी मैं एक सर्वे पर हूँ। क्या आप मेरे कुछ प्रश्णों का जवाब दे देंगे?"

मैंने कहा, "जी कोशिश कर सकता हूँ। आप प्लीज़ यहाँ बैठ जाइये।"

वोह सोफ़े पर बैठ गयी और हमारे घर का दरवाजा अभी खुला ही था। मैंने दूसरे सोफ़े पर बैठ कर कहा, “पूछिये जो पूछना है।”

वोह बोली, "जी मुझे एक कनज़्यूमर कंपनी ने भेजा है सर्वे के लिये। आप लोग अपने घर की ज़रूरत की चीजें कहाँ से खरीदते हैं?" इस तरह वोह सवाल पर सवाल पूछती रही और मैं जवाब देता गया। हमारे कमरे की बड़ी खिड़की से तेज हवा आ रही थी और दरवाजा काफी हिल रहा था।

कुछ देर बाद मैंने पूछा, "इस तरह के वैदर में भी आप क्या सब घरों में जाकर सर्वे करती हैं ?"

"जी, जॉब तो जॉब ही है ना।"

"तो आप शादी शुदा हो कर (उसके माथे पर सिन्दूर था) भी जॉब कर रही हैं ?"

अब वोह भी थोड़ी सी खुल सी गयी। बोली, "क्यों, शादी शुदा औरत जॉब नहीं कर सकती?"

"जी यह बात नहीं, घर घर जाना, जाने किस घर में कैसे लोग मिल जायें?"

उसने जवाब दिया, "वैसे तो दिन के वक्त ज्यादातर हाऊज़वाइफ ही मिलती हैं। कभी कभी ही कोई मेल मेंबर होता है।"

"तो आपको डर नहीं लगता।"

"जी अभी तक तो नहीं लगा। फिर आप जैसे शरीफ आदमी मिल जायें तो क्या डर?"

शरीफ आदमी – एक बर तो सुन कर अजीब लगा। इसे क्या मालूम कि मैं इसे किस नज़र से देख रहा था। साड़ी और ब्लाऊज़ के नीचे उसकी चूचियाँ तनी हुई थीं और मेरे लंड में खुजली सी होने लगी। जी चाह रहा था कि काश सिर्फ़ एक बार चूम सकता और ब्लाऊज़ के नीचे उन चूचियों को दबा सकता। हाथों कि अँगुलियाँ लंबी–लंबी

मुलायम सी। वैसे ही मुलायम से सैक्सी पैर ऊँची ऐड़ी के सैंडलों में कसे हुए। देख–देख कर लंड महाराज खड़े हो ही गये। मन में ज़ोरों से ख्याल आ रहा था कि क्या गज़ब की अप्सरा है। इसकी तो चूत को हाथ लगाते ही शायद हाथ जल जायेगा।

तभी वोह बोली, "अच्छा, थैंक्स फ़ोर एवरीथिंग। मैं चलती हूँ।"

मानो पहाड़ टूट गया मेरे ऊपर। चली जायेगी तो हाथ से निकल ही जायेगी। अरे प्रताप सहाब, हिम्मत करो, आगे बढ़ो, कुछ बोलो ताकि रुक जये। इसकी बूर में अपना लंड नहीं डालना है क्या ? बूर में लंड ? इस ख्याल ने बड़ी हिम्मत दी।

"माफ़ कीजियेगा, अगर आप बुरा ना मानें तो अपना नाम तो बत दीजिये?" मैंने डरते हुए कहा।

वो कोयल सी आवाज़ में बोली, "इसमें बुरा मानने की क्या बात है... प्रमिला।"

"प्रमिला जी, आप जैसी सुंदर औरत को थोड़ा केयरफुल रहना चाहिये।"

"सुंदर?"

मैं थोड़ा सा घबराया, लेकिन फिर हिम्मत करके बोला, "जी, सुंदर तो आप हैं ही। बुरा मत मानियेगा। आप प्लीज़ अब तो चाय पी कर ही जाइये।"

"चाय, लेकिन बनायेगा कौन ?"

"मैं जो हूँ, कम से कम चाय तो बना ही सकता हूँ।"

वोह हंसते हुए बोली, "ठिक है, बनाइये।"

मैंने हवा में हिलते दरवाजे को हल्के–हल्के बंद कर दिया और उसका ध्यान हटाने के लिये कहा, "आप प्लीज़ वहाँ सोफ़े पर बैठ जाइये। टीवी ऑन कर लीजिये।" किचन में जाकर मैंने चाय के लिये बर्तन गैस पर रखा और पानी डाला, गैस ऑन किया, फ्रिज से

दूध निकाला और दूध थोड़े से पानी में मिलाया। मैं चाय के उबलने का वेट कर रहा था और इधर मेरा लंड उबल रहा था। इतनी सुंदर औरत पास बैठी थी और मुझे पता नहीं था कि कैसे आगे बढ़ूं।

तभी वोह पीछे से आयी और बोली, "क्या मैं आपकी कुछ मदद करूँ?"

मैंने जवाब दिया, "बस देख लीजिये, कि चाय ठीक बन रही है या नहीं।" मैंने अब और हिम्मत कर के कहा, "प्रमिला जी, आप वाकय में बहुत सुंदर हैं। और बहुत अच्छी भी। आपके पति बहुत ही खुशनसीब इंसान हैं।"

"आप प्लीज़ बार-बार ऐसे ना कहिये। और मुझे प्रमिला जी क्यों कह रहे हैं। मैं तो आपसे छोटी हूँ।"

दोस्तों यह हिंट काफ़ी था मेरे लिये। क्योंकि अगर औरत नहीं चाहे तो उसे चोदना बड़ा मुश्किल है। आखिर हमें रेप तो करने नहीं हैं। मैं समझ गया कि ये अब चुदवाने के लिये तैयार है।

"ठिक है, प्रमिला जी नहीं... प्रमिला... तुम कितनी सुंदर हो, मैं बताऊँ?"

"कहा तो है आपने कई बार। अब भी बताना बाकी है?"

"बाकी तो है।" यह कह कर मैंने गैस बंद किया।

"बस एक बार अपनी आँखें बन्द करो... प्लीज़।"

उसने आँखें बंद की। मैंने कहा, "आँखें बंद ही रखना।" और मैंने उसको कुहनी के पास से पकड़ कर आहिस्ते-आहिस्ते कमरे में लाया। हल्के से मैंने उसके गुलाबी-गुलाबी नर्म-नर्म होंठों पर अपने होंठ रख दिये। एक बिजली सी दौड़ गयी मेरे शरीर में। लंड एकदम तन गया और पैंट से बाहर आने के लिये तड़पने लगा। उसने तुरन्त आँखें खोलीं और आवाक सी मुझे देखती रही। और दोस्तों हंस कर और शर्मा कर मेरी बांहों में आ गयी। मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। कस कर मैंने उसे अपनी बांहों में

दबोच लिय। ऐसा लग रहा था बस यूँ ही पकड़े रहूँ। फिर मैंने सोचा कि अब समय नहीं वेस्ट करना चाहिये। पका हुआ फल है, बस खा लो।

तुरंत अपनी बांहों में मैंने उसे उठाया (बहुत ही हल्की थी) और बेडरूम में लाकर बिस्तर पर लिटा दिया। उसने आँखें बंद कर रखी थी। बहुत शरमा रही थी बेचारी। साड़ी और सैंडल पहने हुए बिस्तर पर लेटी हुई वो शरमाती हुई आँखें बंद किये हुए थी। ब्लाऊज़ में से उसके बूब्स ऊपर नीचे होते हुए देख कर मैं पागल हो गया। आहिस्ते से साड़ी को एक तरफ़ करके मैंने उसकी दहिनी चूंची को ऊपर से हल्के से दबाया। एक सिरहन सी दौड़ गयी उसके शरीर में।

बंद आँखों से ही बोली, "प्लीज़ प्रताप सहाब, जल्दी से! कोई आ ही ना जाये।"

"घबराओ नहीं, प्रमिला डार्लिंग। बस मज़ा लेती रहो। आज मैं तुम्हे दिखला दूँगा कि प्यार किसे कहते हैं। खूब चोदूँगा मेरी रानी।" मैं एकदम फ़ोर्म में था। यह कहते हुए मैंने उसकी चूचियों को खूब दबाया और होंठों को कस-कस कर चूसने लगा। फिर मैंने कहा, "चुदवाओगी ना?"

आहा, गज़ब की शरमाती हुई बोली, "प्रताप सहाब, आप भी... बहुत बदमाश हैं... अब इस भरी दोपहर में दर-दर भटकने की बजाय यहीं अच्छा है। सारे मर्द एक जैसे होते हैं। अब आप जो करेंगे सो करेंगे।"

"प्रमिला रानी, सेक्स में क्या शरमाना।" और उसके नर्म-नर्म गालों को हाथ में ले कर होंठों का खूब रसपान किया। मैं उसके ऊपर चढ़ा हुआ था और मेरा लंड उसकी चूत के ऊपर था। चूत मुझे महसूस हो रही थी और उसकी चूचियाँ... गज़ब की तनी हुई... मेरे सीने में चुभ-चुभ कर बहुत ही आनंद दे रही थी। दाहिने हाथ से अब मैंने उसकी बांयी चूंची को खुब दबाया और एक्साईटमेंट में ब्लाऊज़ के नीचे हाथ घुसा कर उसे पकड़ना चाहा।

"प्रताप, ब्लाऊज़ खोल दो ना।" उसका यह कहना था और मैंने तुरन्त उसे घुमा कर ब्लाऊज़ के बटन खोले और साथ ही साथ ब्रा का हुक खोला और पीछे से ही हाथ को ब्रा के नीचे से उसके बूब्स को पुरा समेट लिया। आहा, क्या फ़ीलिंग थी, सख्त और

नरम दोनों, गरम मानो आग हो। निप्पल एकदम तने हुए। जल्दी–जल्दी ब्लाऊज़ और ब्रा को हटाया। साड़ी को परे किया और पेटीकोट के नाड़े को खोल कर उसे हटाया। पिंक पैंटी और सफेद हाई–हील के सैंडल पहने हुए नंगी लेटी हुई देख कर तो मैं बर्दाश्त ही नहीं कर सका। शरमा कर उसने अपने बूब्स को छिपाने की कोशिश की और टाँगों को क्रॉस करके चूत को भी छिपाया। मैंने अब अपने कपड़े जल्दी–जल्दी उतारे। लंड तन कर बहर आ गया और ऊपर कि तरफ़ हो कर तड़पने लगा। उसका एक हाथ ले कर मैंने अपने फड़कते हुए लंड पर रख दिया।

“उफ कितना बड़ा और मोटा है", वोह बोली। और आहिस्ता–आहिस्ता लंड को आगे पीछे हिलाने लगी। शादी शुदा औरत को चोदने का यही मज़ा है। कुछ सिखाना नहीं पड़ता। वोह सब जानती है। और अगर महीने के ठीक दिन हों तो कंडोम की भी ज़रूरत नहीं।

मैंने आखिर पूछ ही लिया, "प्रमिला डार्लिंग, कंडोम लगाऊँ?"

वो मुँह हिलाते हुए मना करते हुए खिलखिलायी, "सब ठीक है। अभी मेंसिज़ हुआ ही था।"

मैंने अब उसके बदन से उस पिंक पैंटी को हटाया और इतमिनान से उसकी चूत को निहारा। हल्के हल्के बाल थे। बीच में सुंदर सी छोटी सी चूत। कुछ फूली हुई थी। मैंने उसके ऊपर हाथ रखे और हल्के से दबाया। अँगुली ऐसे घुसी जैसे मक्खन में छूरी। रस बह रहा था और चूत एकदम गीली थी। मैं जैसे सब कुछ एक साथ कर रहा था। कभी उसके होंठों को चूसता, चूचियों को दबाता – कभी एक हाथ से कभी दोनों से। एकदम टाइट गोल और तनी हुई चूचियाँ। उसके सोने जैसे बदन पर कभी हाथ फिराता। फिर मैंने उसकी चूचियों को खूब चूसा और अँगुलियों से उसकी बूर में खूब अंदर बाहर करके हिलाया।

"प्रमिला, अब मैं नहीं रह सकता, अब तो चोदना ही पड़ेगा। कस–कस कर चोदूँगा मेरी रानी।"

पहली बार उसके मुँह से अब सुना, "चोद दीजिये ना प्रताप सहाब, बस चोद दीजिये।"

मज़ा लेते हुए मैंने पूछा, "क्या चोदूँ जानेमन। एक बार फिर से कहो ना। तुम्हारे मुँह से सुनने में कितना अच्छा लग रहा है।"

"अब चोदिये ना... इस... इस चूत को।"

"चूत नहीं, बूर मेरी रानी, बूर। ज्यादा अच्छा लगता है सुनने में। अब मैं तेरी गरम-गरम और गुलाबी-गुलाबी बूर में अपना ये लंड घुसाऊँगा और कस-कस कर चोदूँगा।" मैंने अपना लंड उसकी बूर के मुँह पर रखा और हल्के से धक्का दिया। उसने अपने हाथों से मेरे लंड को पकड़ा और गाईड करते हुए अपनी चूत में डाल दिया। दोस्तों मानो मैं जन्नत में आ गया।

मैं बोल ही उठा, "उफ़, क्या बूर है प्रमिला। मज़ा आ गया।" अब उसने भी एक्साइट हो कर बगैर झिझके कहा, "चोद दो प्रताप... बस अब इस बूर को खूब चोदो।"

दोस्तों... चूचियाँ दबाते हुए, होंठ चूसते हुए ज़ोर-ज़ोर से चोद-चोद कर ऐसा मज़ा मिल रहा था कि पता ही नहीं चला कि कब मैं झड़ गया। झड़ते झड़ते भी मैं उसे बस चोदता ही रहा और चोदता ही रहा।

"प्रमिला... बहुत टेस्ती चुदाई थी यार। तुम तो गज़ब की चीज़ हो।"

"मुझे भी बहुत मज़ा आया, प्रताप सहाब।" वोह कसकर मुझे पकड़ते हुए बोली। उसकी चूचियाँ मेरे सीने से लग कर एक अलग ही आनंद दे रही थी। दोस्तों, फिर बीस मिनट बाद, पहले तो मैंने उसकी बूर को चाटा और उसने मेरे लंड को चूसा, हल्के-हल्के। और फिर हमने कस-कस कर चुदाई की। और इस बार झड़ने में काफी समय ही लगा। मैंने शायद उसकी चूचियाँ और बूर और होंठ और गाल के किसी भी अंग को चूसे बगैर नहीं छोड़ा। इतना मज़ा पहले कभी नहीं आया था। बस गज़ब की चीज़ थी वोह औरत।

कपड़े पहनने के बाद मैंने उसे ५०० रुपये दिये जो कि उसने ना-ना करते हुए शरमाते हुए ले लिये। और मैंने पूछा, "प्रमिला, अब तो तुम्हें और कई बार चोदना पड़ेगा। अपनी इस प्यारी सी चूत और प्यारी-प्यारी चूचियों और प्यारे-प्यारे होंठों और प्यारी-प्यारी

प्रमिला डार्लिंग के दर्शन करवाओगी ना?" मैंने उसका फोन नंबर ले लिया और कह दिया कि मैं बता दूँगा जिस दिन कोई घर पर नहीं होगा।

अब वोह मुझसे फ्री हो गयी थी और बोली, "प्रताप, डोंट वरी, होटल में चुद.. चुद.. वायेंगे।"

उसकी यह बात सुनते ही मैंने उसे एक बार और बांहों मेन भींच लिया और उसके होंठों का एक तगड़ा चुंबन लिया। फिर वो मेरे बंधन से आज़ाद होकर दरवाजे से बाहर निकल गयी। कुछ दूर जाकर पीछे मुड़ी और एक मुस्कान बिखेर कर धीरे धीरे मेरी आँखों से ओझल हो गयी।